

ओ३म्

# ईसाई पैगम्बरों का चरित्र-चित्रण

Sharm prakash Arya

लेखक

डा० श्रीराम आर्य  
(कासगंज)

9/33

सम्पादक

लाजपत राय अग्रवाल  
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

दूरभाष : (०१२०)-२७०१०९५, चलभाष : ०९९१०३३६७१५

तृतीय आवृत्ति जनवरी सन् २०१० ई०

मूल्य : दो रूपये मात्र





- शब्द संयोजक : नीता टाइपोग्राफिक्स  
जी-६०२, गोविन्दपुरम, गाजियाबाद  
चलभाष : ०९९७१२५२५५३
- मुद्रक : स्वास्तिक ऑफसेट, गाजियाबाद ।  
मोबाइल : ०९८९९८१२७७१
- प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग  
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद  
पिन कोड : २०१००१ (उ०प्र०)  
दूरभाष : (०१२०) २७०१०९५  
चलभाष : ०९९१०३३६७१५
- लेखक : डॉ० श्रीराम आर्य (कासगंज)
- सम्पादक : लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)
- मूल्य : दो रूपये मात्र
- संस्करण : तृतीय आवृत्ति जनवरी सन् २०१० ई०

## Isai Paigmbroon Ka Charitr-Chitran

Author : Dr. Shri Ram Arya

Publisher : Amar Swami Prakashan Vibhag

Ghaziabad (U.P.) INDIA

Ph.: 0120-2701095 Mob.: 09910336715

**भारत भर में हमारे सभी वितरकों के पास उपलब्ध**

## ईसाई मजहब व बाईबिल का पोलखाता अर्थात् ईसाई पैगम्बरों के चरित्रों का कच्चा चिट्ठा

सारे संसार में बुद्धिमान लोगों ने मनुष्यों के उत्थान के लिये शुभ आचरण करने पर जोर दिया है । मनुष्य यदि उत्तम विचार रखे, परोपकार की वृत्ति रखे, दीन दुखियों निर्बलों, असहायों पर दया दृष्टि रखे, प्राणीमात्र को अपने कर्मों से किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचाये, सबके हित में अपना हित समझे, नेत्रों से उत्तम चीजों को देखे, वाणी से श्रेष्ठ बातें करे, कानों से शुभ कथा वार्तायें सुने, मन में सदा शुभ विचार व श्रेष्ठ संकल्प धारण करे, निराकार सर्वव्यापक जगत्कर्ता प्रभु में प्रीति रखे, उसकी भक्ति में मन को लगाये, सदाचार व संयम का जीवन व्यतीत करे मन, बुद्धि व आत्मा को पतित बनाने वाले मांस मदिरा आदि विषा तुल्य गन्दे पदार्थों के सेवन से बचे, सत्य ज्ञान प्राप्त करे व महापुरुषों का सत्संग करे तो उसके लिये इस लोक में सुख व मृत्यु के अनन्तर उत्तम जन्म जन्मान्तरों के शुभ



कर्मों के परिणाम स्वरूप आत्मा के निर्मल होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह भारत के आर्यों का वैदिक सिद्धान्त है।

किन्तु चन्द लोगों ने अपना बड़प्पन दिखाने के लिये स्वयं को खुदा का बेटा या खुदा का एक मात्र पैगम्बर अथवा स्वयं को साक्षात् खुदा बताकर संसार में भोले भाले लोगों को बेवकूफ बनाया है और अपने चेलों की संख्या बढ़ाने के लिए यह घोषित किया है कि परमसुख अथवा मोक्ष के हम ही ठेकेदार हैं, खुदा की तरफ से हम पर ही मोक्ष की सोल एजेन्सी है। बिना हमारे ऊपर ईमान लाये किसी को भी मुक्ति नहीं मिलेगी। हम इन्सान को अथवा अपने चेलों को मोक्ष, स्वर्ग अथवा बहिश्त में घुसने का पासपोर्ट या टिकिट देंगे।

जो हमारे चेलों में नाम नहीं लिखायेगा, आंखें बन्द करके हमारे ऊपर ईमान नहीं लायेगा, हम उसे नरक या दोज़ख में ठूस देंगे। फिर चाहे उसके कर्म कितने ही अच्छे क्यों न हों।

(युहन्ना पर्व १४ का भावार्थ व कुरान शरीफ़ का सारांश)

इस प्रकार की बातें आपको ईसाई तथा इस्लाम मजहबों में बहुत कुछ मिलेंगी। इन दोनों मजहबों के

संस्थापकों ने बहिश्त के वह नजारे अपने चेलों को फांसने के लिये अपने ग्रंथों या उपदेशों में पेश किये हैं कि अज्ञानी लोग उनके लालच में फंस कर उनके मजहबों में फंसते रहे हैं।

इस्लाम का बहिश्त में बहिश्ती शराबें ७०-७० हूरें (अछूती सुन्दरी औरतें) व ७२-७२ गिलमों अर्थात् बड़ी बड़ी आंखों वाले खूबसूरत लड़कों) का लालच अरब के वहशी लोगों को मुसलमान बनाने का प्रधान आकर्षण रहा है, तो यूरोप के अज्ञानी जन समुदाय को ईसाइयत के बहिश्त व ईसा के फर्जी करिश्में व खुदा के बेटे पर ईमान लाना एक मुख्य कारण ईसाइयत में प्रवेश करने का रहा है।

इज़रत ईसा मसीह ने खुदा का इकलौता बेटा अपने को बताया तो हजरत मौहम्मद साहब ने अपने को खुदा का आखिरी पैगम्बर बताकर अपने मजहब का प्रचार किया था। हम इस लेख में इस्लाम पर न लिख कर केवल ईसाई मजहब के बारे में जनता को कुछ परिचय करावेंगे।

ईसाई मजहब के धर्मग्रन्थ बाईबिल का यह कहना कि ईसा मसीह खुदा के इकलौते बेटे थे, एक



बड़ी बेतुकी बात है। हज़रत खुदा का बेटा है तो उसके बहू, साले, सास, ससुर, सालियाँ व सलैज वगैरा सभी रिश्तेदार अवश्य होंगे। ईसाई लोग इन सबके नाम व पते बतावें, ताकि खुदा की ससुराल का हाल मालूम हो सके।

हज़रत खुदा के सिर्फ एक ही बेटा मसीह पैदा हुआ और आगे उसने अपनी कोई औलाद नहीं पैदा की, इसका क्या कारण हुआ? क्या वजह हुई कि खुदा की गर्भवती बीवी ने खुदा को छोड़ कर जल्दी ही यूसुफ नाम के बड़ई को पसन्द कर लिया और उससे शादी कर ली?

खुदा से अपने क्वारेपन की पहिली औलाद (गर्भ) ईसा को अपने पिता के ही घर में जन्म न देकर गैर आदमी से शादी करके उसके घर जाकर जन्म देने की श्रीमती आदरणीया मरियम महोदया को क्यों आवश्यकता पड़ी? क्या इस रहस्य को ईसाई विद्वान पादरीगण खोल सकेंगे?

जब खुदा के बेटे मसीहा को इन्सान ने फाँसी देकर मारा तो वह सूली पर चिल्लाता रहा कि-

“हे मेरे बाप ! मुझे बचा लो”

( मती २७/४६ )

तो खुदा अपनी एक मात्र औलाद को बचाने क्यों

नहीं आया ? ईसा ने बड़े जोर से चिल्ला चिल्लाकर फाँसी के तख्ते पर प्राण छोड़ा।

( मती २७/५० )

इससे सिद्ध है कि ईसा मौत से बेहद डरता था। उससे भारत के लाल भगत सिंह जैसे लोग ज्यादा बहादुर थे जिन्होंने हंसते हुए अपने हाथों से फाँसी का फन्दा गले में पहिना था। वीर जोरावर की मिसाल ईसा से कहीं ज्यादा ऊँची है जो हंसते हुए धर्म के लिए दीवारों में चुने गये उस पर भी ईसा अपने को साक्षात खुदा का बेटा मानते थे तो बाप का धर्म था कि वह बेटे की मदद करता।

बेटे तीन तरह के होते हैं, ( १ ) पूत ( २ ) सपूत और ( ३ ) कपूत। पूत वह जो बाप के जैसा हो। सपूत वह है जो बाप से भी बढ़कर काम करे। कपूत वह है कि जो बाप का नाम भी डुबो दे।

हो सकता है कि ईसा मसीह खुदा के भी पूत व सपूत न होकर तीसरे नम्बर के बेटे हों और शायद इसी के लिये खुदा ने उनको त्याग दिया हो। बहुत सम्भव है कि जैसे-दुनिया को पैदा करके खुदा बाईबिल में पछताया।

( उत्पत्ति )

वैसे ही एक औलाद ईसा को पैदा करके पछताया हो



और दुःखी हो कर आगे को ब्रह्मचर्य धारण कर बैठा हो।

ईसाइयों का मज़हब क्या है ? एक तमाशा है । ईसाई खुदा के यहाँ बेटा है बीवी है, बैठने को तख्त है, रहने को मकान है, रक्षा के लिये फौज है, खिदमत के लिये फरिश्ते हैं । अपने मकान से उतर कर अदन के बाग में ठंडी ठंडी हवाओं में सैर करता है और आदम से बातें करता है ।

( उत्पत्ति )

शैतान से डरता है । गुण्डा शैतान जिन गरीब लोगों पर हावी हो जावे उन्हें दण्ड देता है, शैतान को सजा देने की उसमें शक्ति नहीं है ।

खुदा याकूब से रात भर कुश्ती लड़ता है और न वह याकूब को पछाड़ पाता है, न याकूब को गिरा पाता है ।

( उत्पत्ति-३२ )

इन्सान को आदमी के पाखाने से रोटी पका कर खाने की आज्ञा देता है ।

( जेहकेल पर्व ४ )

बाप को अपनी बेटी से व्यभिचार व शादी करने की आज्ञा देता है तथा उसे अच्छा काम बताता है ।

( करन्थियो ३६-३७-३८ )

उसका बेटा मसीह शराब पीता है ।

( मती ११/१९ )

वह गधों की चोरी कराता है ।

( युहन्ना १२/१४ तथा लूका १९/३० )

ईसा खुदा का सोल एजेन्ट होने का दावा करता है ।

( युहन्ना १४/६ )

यहोवा परमेश्वर औरतों को नंगा करता है ।

( याशाशाह ३/१६-१७ )

ईसाई पैगम्बर अत्यन्त चरित्रहीन थे । यहूदा ने अपनी बेटे की बहू से व्यभिचार किया ।

( उत्पत्ति ३८/१२-२० )

पैगम्बर लूत ने अपनी दो खास बेटियों से शराब पी करके उन्हें गर्भवती बनाया ।

( उत्पत्ति १९/ ३३-३८ )

हज़रत अविराहम ने अपनी बहिन से व्यभिचार किया व झूठ-मूठ की शादी की ।

( उत्पत्ति १२/११-१३ )

याकूब ने अपनी दासियों के साथ व्यभिचार किया व उसकी बेटी दीन ने हमूर के बेटे सिकम के साथ व्यभिचार किया ।

( उत्पत्ति ३४/२४-३० )

पैगम्बर दाऊद ने उरियाह की खूबसूरत बीवी से व्यभिचार किया, उरियाह को मरवा डाला व उसकी बीवी को अपने घर में डाल लिया।

(सैमुएल २ पर्व ११/२-२५)

दाऊद के बेटे आमनून ने अपनी सगी बहिन तामार के साथ जबर्दस्ती काला मुंह (व्यभिचार) किया।

(सैमुएल २/१३/१-२०)

ईसा की माँ मरियम क्वारेपन में ही बाप के घर से गर्भवती होकर आई थी और उसी गर्भ से ईसामसीह पैदा हुए।

(इन्जील १/१८-९)

ईसा ने गधा चुरवाया।

(मती २१/१-७)

इसराइल में रूबेन ने अपने पिता की बीवी के साथ व्यभिचार किया।

मूसा ने फौज को क्वारी अछूती कन्याओं से खुले व्यभिचार की आज्ञा दी।

(गिनती नामक पुस्तक ३१/१४-१८)

ईसाई खुदा अत्यंत बेरहम व जाहिल है। वह मर्द, औरतें, नन्हें मासूम बच्चे, भेड़, ऊंट, गधे आदि निर्दोषों

को अत्यन्त बेरहमी से कत्ल करने की आज्ञा देता है।

(१ सेमुएल १५/२)

बाइबिल ईसाई मजहब को धोखे व मक्कारी से फँसाने की आज्ञा देता है।

(चोलस का फिलौपियों को खत १/१८)

बाइबिल मन्दिरों व मूर्तियों को तोड़ डालने की आज्ञा देती है।

व्यवस्था विवरण ७/५)

बाइबिल देव पूजा करने वालों को खुले आम कत्ल करने को कहती है।

(व्यवस्था विवरण १३/९)

बाइबिल इतवार के दिन काम करने वालों को मार डालने का आदेश देती है।

(निर्गमन ३५/२)

ईसाई तालीम औरतों को व्यभिचार के लिए लूटने का हुक्म देती है।

(न्यायियों को २१/२१)

ईसाई तालीम पर स्त्री, माल व बाल बच्चों को लूटने की व्यवस्था देती है।

(विवरण २०/१४)



ईसा ने लोगों को लड़ने के लिए शस्त्र खरीदने का आदेश दिया है । उसने कहा कि मैं दुनिया में झगड़े फसाद पैदा कराने आया हूँ । मत समझो कि मैं मुहब्बत पैदा कराने आया हूँ ।

( मती १०/३४-३६ )

ईसा ने कहा कि जितने ( पैगम्बर ) मुझसे पहिले आये सब चोर डाकू थे ।

( योहन रचित सुसमाचार पर्व १०/९ )

इससे सिद्ध है कि ईसाई पैगम्बर चोर और डाकू थे । उनके चरित्र भी खराब थे । ऐसे खराब चरित्रों के लोगों को केवल ईसाई लोग ही भला आदमी व पैगम्बर मान सकते हैं । दुनिया के लोग तो ऐसों के नाम से भी घृणा करेंगे ।

जब पैगम्बरों का यह हाल है तो उनके अनुगामी लोगों के चरित्र क्यों कर भ्रष्ट न होंगे, जैसे गुरु वैसे चले होने चाहिए ।

इसलिये हमारा कहना है कि ऐसे गलत खुदा, गलत पैगम्बर व गलत आदर्शों वाली पुस्तकों को कभी नहीं मानना चाहिये ।

ईसाई मजहब एक गलत मजहब है । वह लोगों को

गुमराह करता है । इसीलिये कोई समझदार आदमी इस मजहब में प्रवेश नहीं करता है । ईसाई लोग धोखे, मक्कारी व लोभ लालच से भोले बेपढ़े गरीब मेहतरों को बहकाकर ईसाई बना लेते हैं । किसी पढ़े लिखे आदमी से यह कभी बात भी करने की हिम्मत नहीं करते हैं ।

ये भारत में पैदा हुए भारतीय अन्न जल से पले, भारतीय ईसाई आज स्वतन्त्र देश के नागरिक होते हुए अपने भारतीय पूर्वज राम कृष्ण को भूल कर विदेशी ईसा को अपना दिल व दिमाग बेच कर उसकी उपासना करते हैं । उसकी गुलामी में फंसे हैं । कितनी लज्जा की बात है कि ये जिनके रक्त से पैदा हैं उन्हीं को भूल बैठे हैं ।

मेरे ईसाई बन्धुओं तुम्हारा और हम भारतीयों का खून का रिश्ता है, विदेशी ईसा से तुम्हारा पानी का रिश्ता है । खून का रिश्ता पानी के रिश्ते से वजनी होता है । जब देश स्वतन्त्र हो गया तो हमारे देश के लिये, भारतीय आर्य रक्त वालों के लिये यह कलंक की बात है कि अपने देश के महापुरुषों को त्याग कर विदेशियों की गुलामी में अपने दिमागों को खराब करें । अतः मैं भारतीय ईसाई बन्धुओं से अपील करता हूँ कि वे आर्य समाज में शुद्धि करा कर अपने पूर्वजों के सत्य वेद धर्म को स्वीकार करें,

और मानव जीवन को सफल करें।

ईसा के अन्ध भक्त विदेशीय पादरियों से भी मृदु दो शब्द कहने हैं कि तुम लोग अपने घर योरोप व अमरीका में जाकर पहिले उसे ठीक करो जहां चोरी, जिनाखोरी, शराब व गोश्तखोरी बदकार आम रिवाजें हैं। सारा ईसाई संसार एक दूसरे के खून का प्यासा बना हुआ है। गत दो महायुद्ध इसका सबूत हैं।

तुम भारत में बदमाशियाँ करना बन्द करो। भारत के लोग धर्म के बारे में तुमसे ज्यादा जानते हैं। तुम अभी धर्म ज्ञान के बारे में बच्चे हो। अपनी शुद्धि कराकर हम आर्यों से अभी तुम धर्म के बारे में शिक्षा प्राप्त करो।

तुम्हारे धर्म में दुनिया की सारी ही बुराइयाँ भरी हुई हैं। एक भी ऐसी ज्ञान विज्ञान की बात ईसाई मजहब या बाईबिल में नहीं है जिस पर तुम गर्व कर सको, जिस थोथे धर्म को धोखे, मक्कारी व लालच से तुम भारत के गरीबों में फैलाने चले हो उसका खण्डन तो भारत का बच्चा-बच्चा कर सकता है। इसलिए नौकरियों व लम्बी तनख्वाहों के कारण तुम लोगों को गुमराह करने की कोशिशें करने से बाज आओ। वरना दम हो तो शास्त्रार्थों द्वारा अपने धर्म की सत्यता सिद्ध करने को मैदान में

उतरो। यह हमारा सारे ईसाई जगत को निमन्त्रण है।

जिन विदेशीय पादरियों का ऐसा ख्याल है कि वे भारत निवासियों को ईसाई बना कर (योरोप अमरीका वालों के हम मजहब बना कर) पुनः भारत को विदेशियों का गुलाम बना सकेंगे वे मूर्खों की दुनिया में रहते हैं। ऐसे देशद्रोही पादरियों को भारत से तुरन्त बाहर निकाल देना भारत सरकार का कर्तव्य है।



नोट- ईसाई मजहब से सम्बन्धित अनेकों ट्रेक्ट (लघु पुस्तिका) हमारे द्वारा विभिन्न लेखकों द्वारा रचित प्रकाशित कराये गये हैं। इच्छुक सज्जन प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित करें एवं इन ट्रेक्टों को मंगवा कर अधिक से अधिक प्रचार एवं प्रसार करें।

**प्रकाशक**

**अमर स्वामी प्रकाशन विभाग**

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

दूरभाष : (०१२०)-२७०१०९५, चलभाष : ०९९१०३३६७१५



**अमर स्वामी प्रकाशन विभाग**  
**द्वारा प्रकाशित**  
**लघु साहित्य की संक्षिप्त सूची**

क्रमांक	पुस्तकों के नाम	लेखक	मूल्य
१.	गीता में ईश्वर का स्वरूप	अमर स्वामी सरस्वती	३.००
२.	मूर्ति पूजा की हानियाँ	„	१.००
३.	कौन कहता है अहिल्या पत्थर- शिला हो गयी थी ?	„	२.००
४.	कौन कहता है विवाह के समय रामजी की आयु पन्द्रह और सीताजी की आयु छः वर्ष थी ?	„	१.००
५.	मजहब ही तो सिखाता है आपस में बैर रखना	रिसर्चस्कालर राकेश कुमार आर्य एडवोकेट	१.००
६.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-प्रथम भाग ( धार्मिक पाखण्डवाद )	„	१०.००
७.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-द्वितीय भाग ( मुस्लिम तुष्टीकरण )	„	१०.००
८.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-तृतीय भाग ( काँवड़ की हकीकत )	„	१०.००
९.	मूर्ख बनाओ मौज उड़ाओ-चौथा भाग ( आर्य समाज एक विश्लेषण )	„	१०.००

नोट- विस्तृत जानकारी के लिए प्रकाशन से बृहद सूची पत्र मंगाये।

प्रबन्धक- अमर स्वामी प्रकाशन विभाग